राज्य अध्याय 43

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यहेजकेल 2,18,33 और 34**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (यहेजकेल 2,18,33 और 34) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **(16) रोमियों 12:16**

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(16) रोमियों 12:16. "आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।"

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***[यीशु के दृष्टान्त]*** **तोड़े**

मत्ती 25:14-30 में "तोड़ों का दृष्टांत"

परमेश्वर के राज्य में पुरूस्कार के बारे में एक दृष्टांत है।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 25:14-30।

---

1. <u>दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।</u>

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

एक व्यक्ति जिसने अपनी संपत्ति अपने दासों को सौंप दी। उसने तीनों दासों में प्रत्येक को अलग-अलग तोड़े दिए। "एक तोड़ा" भार का एक माप है, लेकिन अलग-अलग समय में विभिन्न मूल्यों के साथ पैसे की एक इकाई भी है। यीशु के समय में, *अटारी की प्रतिभा* छह हजार दीनार से कम नहीं थी, और एक दीनार एक सैनिक या मजदूर की दैनिक मजदूरी थी। इसका मतलब था कि एक साधारण कार्यकर्ता को एक तोड़ा अर्जित करने के लिए लगभग बीस साल काम करना होगा! यह व्यक्ति एक बहुत अमीर व्यापारी था और चाहता था कि उसकी अनुपस्थिति में उसका पैसा बढ़े।

व्यक्ति ने अपने प्रत्येक दास को उनकी क्षमता के अनुसार दिया। यह व्यक्ति एक बुद्धिमान व्यक्ति था। क्योंकि वह जानता था कि उसके दासों के पास समान व्यवसायिक कौशल नहीं है, उसने एक को पांच, दूसरे को दो और तीसरे को एक तोड़ा दिया। याद रखें, एक तोड़ा कोई छोटी राशि नहीं है! यह बीस साल की मजदूरी का प्रतिनिधित्व करता है!

दोनों दासों ने अपना पैसा काम पर लगा दिया - पहले और दूसरे दास ने अपना पैसा काम पर लगाया और अपने पैसे को दोगुना कर दिया। कहानी में यह बताने की ज़रुरत नहीं है कि उन्होंने यह कैसे किया। हालाँकि, अनुमान यह है कि उन्होंने ऐसा ईमानदार तरीकों से किया है!

तीसरे दास ने अपने स्वामी के पैसे छिपा दिए - उसने उसे दिए हुए कार्य की उपेक्षा की! क्योंकि घरों को आसानी से तोड़ा जा सकता था, खजाने को आमतौर पर जमीन के बाहर कहीं दफन किया जाता था (मत्ती 6:19; 13:44)। इस सेवक ने अपने कार्य की उपेक्षा इसलिए नहीं की थी क्योकि जब वह अन्य दो के साथ अपनी राशि की तुलना करता था तब वह हीन महसूस करता था। उसने अपने स्वामी के खिलाफ अनुचित संदेह के कारण अपने कार्य की उपेक्षा की और क्योंकि वह आलसी था!

हिसाब के निपटारे का समय है - उसकी वापसी पर, स्वामी ने अपने दासों के साथ हिसाब-किताब का निपटारा किया।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्याँकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की "कहानी" का संदर्भ "स्थान" और "दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग" से मिलकर हो सकता है। दृष्टांत का स्थान दृष्टान्त को बताने के *अवसर* को बता सकती है, या दृष्टांत को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकती है। स्थान आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी *के बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 24:1-25:13 में पाई जाती है।

मत्ती अध्याय 24 में, यीशु ने अपने दूसरे आगमन और इस युग के अंत के संकेत के बारे में सिखाया। ऐसा होने की घड़ी और

दिन के बारे में कोई नहीं जानता (मत्ती 24:36)। इसलिए प्रत्येक मसीही को जागते और अच्छी तरह से तैयार और शालीनता से अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए जैसे कि मसीह किसी भी क्षण आ सकता है (मत्ती 24: 42,45-46)। यह निम्नलिखित तीन दृष्टांतों की परिस्थिति है: विश्वासयोग्य और अविश्वास्योग्य दासों का दृष्टांत, दस कुंवारियों का दृष्टांत और तोड़ों का दृष्टांत।

जब भी यीशु कहता है, "परमेश्वर का राज्य *ऐसा* है ..." वह यह सिखाना चाहता है कि पृथ्वी पर अब परमेश्वर के शासनकाल के दौरान क्या होता है और जब परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम चरण में होगा तब निश्चित रूप से क्या होगा यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर प्रगट किया जायगा। अंतिम न्याय के दिन, दृष्टान्तों में वर्णित घटनाएं निश्चित रूप से होंगी। इसका मतलब यह है कि वर्तमान में रहने वाले लोग भी दृष्टांतों में वर्णित घटनाओं में शामिल हैं! *आज* यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टांत में आपके और मेरे लिए एक संदेश है!!! तोड़ों के दृष्टांत में इस व्यक्ति और उसके दासों के बीच जो हुआ, यह बताता है कि यीशु मसीह और इतिहास के सभी लोगों के बीच क्या हुआ है। जिस प्रकार स्वामी अपने दासों के साथ वापसी के समय हिसाब लेता है, उसी प्रकार यीशु मसीह इतिहास के प्रत्येक व्यक्ति के साथ अपने दूसरे आगमन पर हिसाब लेगा।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 25:14-30 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या उसका अनुप्रयोग मत्ती 25:28-30 में पाया जाता है।

यह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य से सम्बन्ध रखता है और विशेष रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होगा... उसके दूसरे आने पर, यीशु मसीह सभी लोगों के साथ हिसाबो का निपटारा करेंगे।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

परिचय। यीशु का इरादा कुछ आध्यात्मिक महत्व रखने के दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण को करना नहीं था। दृष्टांत प्रतीकात्मक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व को नहीं मढ़ना चाहिए।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य (मत्ती 25:1,14) । परमेश्वर का राज्य दृश्य कलीसिया, मसीह की देह या मसीहियों के विश्व व्यापी समुदाय से अधिक है।

- **परमेश्वर के राज्य की परिभाषा।** परमेश्वर का राज्य दृश्य कलीसिया, मसीह की देह या मसीही धर्म के विश्वव्यापी समुदाय से अधिक है।

भजन संहिता 24:1। सामान्य रूप से परमेश्वर का राज्य सभी लोगों पर स्वर्ग में राजा या प्रभु शासन या परमेश्वर का शासन है और अनंत काल से अनंत काल तक होता है (भजन संहिता 145:13; 146:10; यिर्मयाह 10:10; 1 तीमुथियुस 6:16); मत्ती 28:18। विशेष रूप से परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के माध्यम से पृथ्वी पर प्रभु का शासन या राज्य है (यूहन्ना 13:3; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; कुलुस्सियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5); 17:14; 19:16)।
प्रकाशितवाक्य 1:5-6। परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूर्ण किये गए उद्धार के कार्य (मत्ती 21: 39,42-

43; 28:18; प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों में उस कार्य के अनुप्रयोग पर आधारित है। (रोमियों 14:17)।
लूका 17:20-21। परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह का संप्रभु शासन या राज्य है जो विश्वासियों के हृदयों में पहचाना जाता है और उनके जीवन में कार्यरत है (मत्ती 6:10,33; 25:34-40)।

- **परमेश्वर के राज्य का परिणाम चार क्षेत्रों में प्रत्यक्ष है:**

- मरकुस 10:25-26। परमेश्वर का शासन शुरू से अंत तक विश्वासियों के उद्धार में प्रगट होता है: अनंत काल में उसका चुनाव (इफिसियों 1:4-5), फिर से जन्म लेना (यूहन्ना 3:3-8), उसके जीवन का परिवर्तन (1कुरिन्थियों 6:9-11) और मसीह के दूसरे आगमन पर उनके शरीर का पुनरुत्थान (1कुरिन्थियों 15:24-26)। इसमें परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार में आत्मा और शरीर के लिए सभी आत्मिक और शारीरिक आशीष शामिल हैं, जो परमेश्वर के शासन के आने के समय उसका पालन करने पर प्रदान की जाती है (इफिसियों 1:3)।
- मत्ती 16:18-19। परमेश्वर का राज्य धरती पर परमेश्वर की एक कलीसिया के रूप में सभी विश्वासियों के संविधान में पाया जाता है (इफिसियों 1:20-23; 1पतरस 2:4-5, 9-10)। कलीसिया ऐसे लोगों का समुदाय है, जिनके हृदयों और जीवन में परमेश्वर के प्रभुत्व को माना जाता है और पालन किया जाता है।
- मत्ती 25:34-40। परमेश्वर का राज्य मानव समाज के हर पहलू में विश्वासियों के अच्छे कार्यों में प्रगट होता है (न्याय, दया और प्रेम जैसे बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक क्षेत्रों में उनका प्रभाव (रोमियों 14:17)।
- 1 कुरिन्थियों 1:24-26। और अंत में, परमेश्वर का राज्य परमेश्वर की बचायी हुई सृष्टि में प्रगट होता है, जो भविष्य में महिमा के साथ नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी, जिसमें बुलाये हुए लोगों में परमेश्वर के उद्धार के अंतिम कार्य होगा (मत्ती 25:34; 2 पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 11:15)।

- **परमेश्वर के राज्य की पाँच विशेषताएं हैं:**

- मत्ती 12:28। परमेश्वर का राज्य विशेष रूप से यीशु मसीह के पहले आगमन पर स्थापित किया गया था (मत्ती 21:43) ।
- यूहन्ना 18:36। परमेश्वर का राज्य वर्तमान दुनिया में है, लेकिन वर्तमान दुनिया का नहीं है (लूका 17:21) ।
- मत्ती 13:11-17। परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के लिए एक प्रकाशन है और एक ही समय में अविश्वासियों के लिए एक पहेली है।
- मत्ती 13:24-26, 36-43। परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर एक वर्तमान रूप है और नई पृथ्वी पर भविष्य का रूप है।
- मत्ती 13:31-33। परमेश्वर का राज्य छोटे से शुरू होता है, बढ़ता है और अंत में सब जगह फ़ैल जायेगा (दानिय्येल 2:34-35,44-45)।

पुरुष की यात्रा। क्योंकि इस दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य के साथ अंत समय से सम्बंधित है जब यीशु मसीह सभी लोगों का न्याय करेगा, व्यक्ति की यात्रा यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक, लोगों को जो कुछ भी परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है, उसके साथ काम करना चाहिए। यीशु का इरादा अपने शिष्यों के इस विश्वास का खंडन करना था कि वह एक समृद्ध यहूदी राज्य स्थापित करने के लिए यरूशलेम जा रहा था (प्रेरितों 1:6)। यह दृष्टांत संसार के अन्य राज्यों की तरह पृथ्वी पर एक वर्तमान राज्य की उनकी आशा को कमज़ोर बनाता है (यूहन्ना 18:36) और उन्हें इंतजार करने और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के भविष्य के राज्य के लिए

धैर्य के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यीशु ने मसीहियों को आलसी या बेकार ना बनने की चेतावनी दी, लेकिन उन्हें उत्सुक होने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वे जानते हैं कि प्रभु में उनका श्रम व्यर्थ नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:58)।

स्वामी और उसकी संपत्ति के प्रबंधक। तोड़े स्वामी के थे, और दासों को ये तोड़े केवल उपयोग और उनके मूल्य को बढ़ाने के लिए सौंपे गए थे। यह एक प्रासंगिक विवरण है। केवल स्वामी ही मालिक है और सभी दास अपने मालिक के प्रति प्रबंधक, जिम्मेदार और जवाबदेह हैं!

उस व्यक्ति ने उनकी क्षमता के अनुसार प्रत्येक को दिया। तोड़ा एक प्राकृतिक क्षमता या आत्मिक उपहार का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, क्योंकि स्वामी प्रत्येक दास को "उनकी प्राकृतिक या आत्मिक क्षमता के अनुसार" देता है (मत्ती 25:15)! इस प्रकार "तोड़े" को प्रभु के लिए व्यापार (कार्य, नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के अवसर का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। लेकिन व्यवसाय (कार्य, नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के अवसरों की ये विभिन्न मात्रा निश्चित रूप से अलग-अलग प्राकृतिक कौशल और आत्मिक उपहारों के लिए संयोजित हैं, जो निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति को दी जाती है। यह एक प्रासंगिक विवरण है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय (नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के लिए अलग-अलग अवसर देता है। लेकिन एक तोड़ा कोई छोटी राशि नहीं है! यह बीस साल की कड़ी मेहनत की मजदूरी का प्रतिनिधित्व करता है!! यहां तक कि अगर आपको परमेश्वर के राज्य के भीतर सिर्फ एक मौका (अवसर) मिलता है, तो यह बहुत ही कीमती है! ऐसा मौका आप पास से न जाने दें! यहां तक कि परमेश्वर ने लोगों के बीच जो कुछ भी सौंपा है, वह परमेश्वर की नज़र में महत्वपूर्ण है!

दो दास काम करने के लिए अपना पैसा लगाते हैं। तोड़ों की संख्या महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि दासों ने उसके साथ क्या किया जिसे उन्होंने प्राप्त किया है, वह महत्वपूर्ण है! यह एक प्रासंगिक विवरण है। अंतिम न्याय के दिन, प्रत्येक व्यक्ति को सौंपे गए अवसरों की संख्या मायने नहीं रखती है, लेकिन जो उसे सौंपा गया था, उसका उपयोग करने में प्रत्येक की ईमानदारी और परिश्रम महत्वपूर्ण होगा!

तीसरे दास ने अपने मालिक के पैसे छिपा दिए। उसने उन अवसरों का उपयोग करने के लिए उपेक्षा की, जो स्वामी ने उसे अपने निर्धारित कार्य (कार्य, सेवकाई, सेवा) करने के लिए दिए थे! उसने चूक या उपेक्षा का पाप किया, जो कि उसके मालिक की आज्ञा के अनुसार नहीं करना था। यह एक प्रासंगिक विवरण है। जिन्हें परमेश्वर ने मना किया है, न केवल उन कामों के लिए दंडित किया जाएगा, बल्कि परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्यों को ना करने के पाप के लिए भी दंडित किया जाएगा! (मत्ती 25:41-45; याकूब 4:17)

हिसाब का निपटारा। अपने दासों के साथ हिसाब निपटाने वाला स्वामी एक ऐसा विषय है जो अक्सर दृष्टांतों में आता है। यह क्षमा न करने वाले दास का दृष्टान्त (मत्ती 18:23), दुष्ट किरायेदारों के दृष्टान्त (मत्ती 21:34), तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25:19) और दस मोहरों (लूका 19:15) के दृष्टान्त में पाया जाता है। इसलिए, एक दास का हमेशा यह कर्तव्य होता है कि वह अपने स्वामी की वापसी के दिन को ध्यान में रखे जब लेखा लिया जायगा! यह एक प्रासंगिक विवरण है।

विभिन्न ज़िम्मेदारियों के लिए एक ही पुरस्कार। यह एक प्रासंगिक विवरण है। क्योंकि पहले और दूसरा दास ही अपने तोड़ो के साथ वफादार रहे थे, इसलिए स्वामी ने उन दोनों को कई चीजों का प्रभारी रखा। दोनों ने उन्हें जो सौंपा गया था, उसे दोगुना कर दिया था। इसलिए दोनों को एक ही पुरुस्कार मिला। उन दोनों को अपने स्वामी की स्वीकृति प्राप्त हुई और उन्हें प्रभु के आनंद (पूर्ण उपस्थिति) में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया गया। यह स्वर्ग में आनंद के पर्व का प्रतिनिधित्व करता है।

लापरवाही की सज़ा। यह एक प्रासंगिक विवरण है। दुष्ट और आलसी दास को कड़ी सजा दी गई थी। बाहर अंधेरे में फेंक दिया जाना, जहां रोना और दांतों का पीसना होगा, जो नरक की पीड़ाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

पुरुस्कार और सज़ा के बारे में सिद्धांत। परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, "जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।" (मत्ती 25:29; लूका 8:18; 19:26)। यह प्रासंगिक है।

- **<u>सबसे पहले यह सिद्धांत वादा करता है कि विश्वासयोग्यता और परिश्रम को पुरस्कृत किया जाएगा।</u>** यह केवल परमेश्वर के लिए हमारे निर्धारित कार्य (कार्य, सेवकाई, सेवा) करने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों का उपयोग करने और विकसित करने के तरीके में है, कि हम और अधिक समृद्ध बनें (लूका 10:29-37 ; गलातियों 6:10; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15)।आत्मिक मामलों के संबंध में यह निश्चित रूप से सच है। आत्मिक मामलों में स्थिर खड़ा होना असंभव है! एक व्यक्ति अग्रिम या पीछे हटता है; उसका लाभ या हानि होती है; उसकी वृद्धि या गिरावट होती है! परमेश्वर द्वारा दी गयी प्रत्येक आशीष भविष्य में मिलने वाली आशीष का वादा है (यूहन्ना 1:16)! जब भी कोई व्यक्ति जो भी उसे सौंपा गया है, उसके साथ काम करता है, तो उसके अवसर कभी खोते नहीं हैं, लेकिन इसके बजाय बढ़ते और प्रभाव में मज़बूत होते हैं।

  मरकुस 4:24-25 के अनुसार, जो कोई भी परमेश्वर के वचन (बाइबल) को पढ़ता है और उसका अध्ययन करता है, उसे अधिक से अधिक आशीष प्राप्त होगी! और मत्ती 13:11-12 और मरकुस 4:13 के अनुसार, जो कोई भी अपने हृदय को खोलता है और परमेश्वर के वचन को प्राप्त करता है, वह एक फसल पैदा करेगा - तीस, साठ और उससे भी सौ गुना अधिक, जो उसे दिया गया है।

  मत्ती के 7:7-8 के अनुसार, जो कोई प्रार्थना करता है, उसे अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलेंगे, और याकूब 4:2-3 के अनुसार, जो प्रार्थना नहीं करता वह प्राप्त नहीं करता है।

  नीतिवचन 11:24 और लूका 6:46 के अनुसार, जो देगा, उसे अधिक प्राप्त होगा, लेकिन जो कोई भी अपने पास रखता है वो वह भी खो देता है, जो उसके पास है।

  और मत्ती 25:29 के अनुसार, जो कोई भी अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों का उपयोग करता है, उसके पास प्रचुर अवसर होंगे, लेकिन जिन अवसरों की उपेक्षा की जाती है, उन्हें ले लिया जाता है।

- **<u>दूसरा, यह सिद्धांत चेतावनी देता है कि अविश्वास और लापरवाही को दंडित किया जाएगा।</u>** मसीही होने का अर्थ है कि आपको अवसर दिए गए हैं, अपने आप को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि स्वामी और स्वामी के राज्य की सेवा के लिए। एक मसीही, मसीह की देह (कलीसिया) से अलग सदस्य नहीं है। एक सदस्य जो देह के विकास में योगदान देता है वह देह के साथ बढ़ता है, लेकिन एक सदस्य जो कुछ भी नहीं करता है वह मर जाता है!

  जब भी कोई व्यक्ति जो उसे सौंपा गया है, उसके साथ काम करने की उपेक्षा करता है, उसके अवसरों को उससे दूर ले जाया जाता है। "क्योंकि तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा।

इसलिए कि तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ देता हूं। " (होशे 4:6) "इसलिए परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा" (मत्ती 8:12; 21:42-43)!

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में कोई आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।
चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 25: 14-30 में तोड़ो का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार" के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "लोगों को अपने स्वभाविक कौशल और आत्मिक उपहार के अनुसार परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों (मौको) का उपयोग करने में विश्वासयोग्य होना चाहिए। परमेश्वर विश्वास और परिश्रम को पुरस्कृत करेंगे, लेकिन वह अविश्वास और लापरवाही को दंडित करेंगे!"

विश्वास परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उन अवसरों के संबंध में जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपे हैं, विश्वासयोग्य और मेहनती हैं। जो कोई भी अपने जीवन-लक्ष्य और जिम्मेदारियों को पूरा करता है, चाहे वह महान हो या छोटा, यह अनुभव करेगा कि उसके अवसरों को कई गुना किया जा रहा है और उसे अधिक अवसरों और अधिक जिम्मेदारियों के साथ पुरस्कृत किया जाएगा। जो कोई भी अपने काम की उपेक्षा करता है और अपने अवसरों को अप्रयुक्त छोड़ देता है, वह अनुभव करेगा कि उसके अवसर कम हो जाते हैं और वह अंत में वह उसे भी खो देगा जो उसे सौंपा गया था।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबिल में दिए समान्तर या पूरक गद्यांश से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर-सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।
खोजें और चर्चा करें। यह कैसे सिखाता है कि जो तोड़ो का दृष्टांत सिखाता है उसकी तुलना में इनमें से प्रत्येक बाइबल गद्यांश क्या सिखाता है?

(1) वर्तमान समय में हमारी संपत्ति का भण्डारण।

पढ़ें उत्पत्ति 39:2-6; लूका 16:2; 1 कुरिन्थियों 4:1-2,7; 2 कुरिन्थियों 5:19-20; 1 पतरस 4:10।
1कुरिन्थियों 4:7 में लिखा है, "तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया? और जब की तूने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया?" बाइबल सिखाती है कि हमारे पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर के अधिकार में है

और हमें परमेश्वर द्वारा सौंपा गया है। हम केवल परमेश्वर की संपत्ति के भंडारी हैं। मसीह के दूसरे आगमन पर, हमें देखभाल के लिए सौंपी गई हर चीज का हिसाब देना होगा।

(2) दूसरे आगमन से पहले ही भण्डारण संभव है।

पढ़ें मत्ती 24:9-14; 25:5,19; 28:18-20; 2 थिस्सलुनीकियों 2: 2-3; 2 पतरस 3:4-9; प्रकाशितवाक्य 20:1-3,7-11। यीशु के दूसरे आगमन पर लौटने से पहले कितना समय व्यतीत होगा? यीशु मसीह को शुरू से ही पता था कि उनके दूसरे आगमन से पहले एक लंबा समय बीत जाएगा। यीशु के दूसरे आगमन से पहले कई ऐतिहासिक घटनाएँ होनी थी। उसे फिर भी मरना था और मरे हुओं में से जीवित होना था; स्वर्ग में उठाया जाना था और पवित्र आत्मा को उड़ेला जाना था। दूसरे आगमन से पहले, सुसमाचार को सम्पूर्ण सृष्टि में प्रचार किया जाना था और पवित्र आत्मा को सभी राष्ट्रों में बहुत से लोगों का पुनर्निर्माण करके बदलना था। सभी राष्ट्रों में यीशु के चेले बनाए जाने थे। दूल्हे को आने में काफी समय लगेगा। इसलिए स्वामी के लौटने से पहले "लंबा समय" बाइबल में एक प्रासंगिक विवरण है।

(3) अंतिम न्याय पर प्रत्येक के भण्डारण की जवाबदेही।

पढ़ें सभोपदेशक 12:14; मत्ती 25:19,35-45; लूका 12:47-48; रोमियों 2:16; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:13। अंतिम न्याय पर प्रत्येक व्यक्ति का क्या होगा? प्रत्येक व्यक्ति **ने** अपने जीवन में जो कुछ भी सोचा, कहा या किया है, उसका एक-एक हिसाब देना होगा! यहां तक कि उसे इस बात का भी हिसाब देना होगा कि उसने क्या सोचने, कहने और करने की उपेक्षा की है! अंतिम न्याय उसके कामों के अनुसार होगा (रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10): उसने जो कुछ उसे सौंपा था, उसके साथ उसने क्या किया। परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार अपने कार्यों का न्याय करेगा (रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10) और उसके अनुसार परमेश्वर ने उन्हें जो अवसर दिए थे उनका उपयोग कैसे किया (मत्ती 25:14-30)।

(4) परमेश्वर ने जहाँ बोया वहीं से काटेगा।

पढ़ें निर्गमन 5:7-9; 1 राजा 12:11; मत्ती 25:15।

दुष्ट और आलसी दास ने परमेश्वर के बारे में क्या कहा, अर्थात् परमेश्वर ने जहाँ फसल नहीं बोई है वह वहां से कटेगा यह सत्य नहीं है!

दो **ग**द्यांश, इस प्रश्न से सम्बन्ध रखते है कि जहां बोया नहीं गया है, और दोनों दुष्ट लोगों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ हैं। निर्गमन 5:7-9 के अनुसार, फिरौन ने वहां कटाई करने की कोशिश करी जहाँ उसने नहीं बोया था। इस्राएलियों को पुआल दिए बिना, उसने मांग की कि वे पहले की तरह ईंटें बनाते रहें। 1 राजा 12:11 के अनुसार, राजा रहूबियाम ने जहाँ बोया नहीं था, उसे काटने की कोशिश की। उसने यहूदा के लोगों से कहा, "मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, मैं उसे और भी भारी करूँगा।"

हालाँकि, परमेश्वर दुष्ट फिरौन या दुष्ट राजा रहूबियाम के समान नहीं है। परमेश्वर जहां फसल नहीं बोता है, वहां नहीं काटता है! लेकिन वह फसल ज़रूर काटेगा जहाँ उसने बोया है! वह निश्चित रूप से हमें उन चीजों के लिए जिम्मेदार ठहराएगा जो उसने हमें सौंपी हैं। मत्ती 25:14 के अनुसार, परमेश्वर, इस दृष्टान्त में स्वामी की तरह, प्रत्येक मनुष्य को उसकी स्वभाविक और आत्मिक क्षमताओं के अनुसार तोड़े (अवसर) देते हैं! जब वह कार्य सौंपता है, तो वह प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व और योग्यता (क्षमता) को दया के साथ आंकता है। हालाँकि, वह अपने तोड़े को वितरित करके बोता है! तोड़े को वितरित करके, वह

(बिखेरता) बोता है! इसलिए यह सिर्फ इतना है कि वह काटता भी है!

(5) बहाने करने वाला मनुष्य तोड़ो का भंडारी नहीं होता।

पढ़ें मत्ती 7:15-23; 22:5; 25:21,23,44-45; लूका 13:26-27; 14:18-20।

दुष्ट और आलसी लोग किस तरह के बहाने बनाते हैं? लोग अक्सर परमेश्वर के सामने सभी तरह के बहाने बनाते हैं।

मत्ती 25:24-25 के अनुसार, दुष्ट सेवक ने अपने कार्य को इसलिए नज़रंदाज़ नहीं किया क्योंकि वह हीन महसूस करता था, बल्कि इसलिए कि वह संदेहजनक था! उसने अपने स्वामी पर कठोर और अनुचित होने का आरोप लगाया। इसी तरह, कई लोग अपने पापों और अपने कर्तव्यों की उपेक्षा के लिए परमेश्वर को दोषी मानते हैं।

लूका 13:26-27 के अनुसार, कुछ लोग यह दावा करेंगे कि वे धरती पर मसीह के साथ जुड़े हुए हैं, कि उन्होंने उसके साथ भोजन किया था और उसकी शिक्षा सुनी थी। लेकिन मसीह उनसे कहेगा कि वह उन्हें नहीं जानता, अर्थात् उनका कोई व्यक्तिगत संबंध या संगति नहीं थी।

मत्ती 7:15-20 उनके बीच में झूठे मसीही भविष्यद्वक्ता और शिक्षकों के प्रति मसीही चेलों के संबंध की बात करते हैं। आखिरकार इन झूठे मसीहियों का दुष्ट प्रभाव बहुत स्पष्ट हो जाएगा!

मत्ती 7:21 उनके बीच में नाम के मसीहियों के प्रति मसीही चेलों के संबंध की बात करता है। जबकि नाम के मसीही मसीह का अपने होंठों से अंगीकार करते हैं, सच्चे मसीही वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं।

मत्ती 7:22-23 में उनके बीच में झूठे मसीही आश्चर्यकर्म करने वालो के प्रति मसीही चेलों के संबंध के बारे में बताया गया है। यद्यपि वे मसीह का प्रचार करते हैं और आश्चर्यकर्म करने में सक्षम हैं, उन्हें मसीह द्वारा नहीं बुलाया गया है (और फलस्वरूप उनका न्याय, बचाया गया) । वे शायद दुष्ट की शक्तियों के साथ मिलकर अपना धर्म निभाते हैं।

मत्ती 25:44-45 के अनुसार, कुछ लोग कहेंगे कि जब वे धरती पर थे, तो उनकी मदद के लिए उन्होंने कभी मसीह को नहीं देखा था। लेकिन मसीह कहेंगे कि जो कुछ उन्होंने अन्य मसीहियों के साथ नहीं किया था, वह उनके साथ भी नहीं किया गया।

मत्ती 22:5 के अनुसार, कुछ लोग कहेंगे कि उनके पास परमेश्वर की बातों के लिए समय नहीं है, और वे अपने व्यवसाय या पृथ्वी के काम में बहुत व्यस्त हैं।

और लूका 14:18-20 के अनुसार, लोग सभी प्रकार के बहाने बनाएंगे कि मसीह के उद्धार की बुलाहट का जवाब न दें। कोई कहेगा कि उसने अभी अभी एक खेत खरीदा है और उसे जाकर देखना चाहिए। एक और कहेगा कि उसने अभी अभी पांच बैल खरीदे और उन्हें आजमा कर देखना चाहिए। कोई दूसरा व्यक्ति कहेगा कि उसने अभी विवाह किया है और इसलिए वह नहीं आ सकता है।

इस प्रकार, दुष्ट और आलसी लोग सभी प्रकार के बहाने बनाएंगे कि वे मसीह का अनुसरण, आराधना या सेवा न करें।

(6) विश्वासयोग्य भंडारी के लिए पुरस्कार।

पढ़ें मत्ती 25: 21,23; 2 तीमुथियुस 4:8।

विश्वासयोग्य और मेहनती दासों को कैसे पुरस्कृत किया जाएगा? उनकी वर्तमान ज़िम्मेदारियाँ, जो पृथ्वी पर ईमानदारी और लगन से क्रियान्वित की जाती हैं, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनकी भावी ज़िम्मेदारियों से बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होंगी। इसके अलावा, आगे जीवन में वे परमेश्वर के आनंद और अन्य मसीहियों के आनन्द को साझा करेंगे!

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएं।

चर्चा करें। तोड़ो के दृष्टांत के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *करना* या *बनना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

परमेश्वर अंतिम न्याय पर प्रत्येक मसीही को अपने अनुग्रह के द्वारा पुरस्कृत करेंगे।

हालाँकि, ये सभी पुरस्कार इसलिए नहीं दिए गए हैं कि मसीही उनके लायक या उन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार, यहां तक कि मसीही जो कार्य करते हैं, वे परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित होते हैं!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान होना चाहिए।

परमेश्वर की सेवा ईमानदारी और लगन से करना महत्वपूर्ण है:

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग क्षमताओं और अवसरों के संबंध में वफादार और मेहनती हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है। परमेश्वर सफलता या परिणाम को पुरस्कृत नहीं करता है, लेकिन विश्वास और परिश्रम को। पूरक 15 भी देखें: "दस मोहरों का दृष्टांत"।

(3) एक महत्वपूर्ण सिद्धांत।

परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत "जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा। लेकिन जिसके पास नहीं है, उसे भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।" (मत्ती 25:29)।

- परमेश्वर ने हमें जो कुछ सौंपा है, उसका उपयोग करने की उपेक्षा करने से, हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था।
- लेकिन उसका प्रयोग करके जो परमेश्वर ने हमें क्या सौंपा है, हम आत्मिक धन में वृद्धि करेंगे!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें**। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[सौंपा गया कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह का अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "एक अयोग्य दास" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यहेजकेल** 3**6, 37, 38 और 39** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(17) रोमियों 12:17।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 14:1-23।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3) ।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।